33. रामचरित मानस में सामाजिक यथार्थ 274
– राम टहल दास

34. फणीश्वरनाथ रेणु की राजनीतिक यात्रा 278
– यशवन्त कुमार

35. पर्यावरणीय प्रदूषण : एक दार्शनिक विमर्श 285
– डा. रागिनी कुमार

36. प्राचीन भारत में आर्थिक क्रियाकलाप और सामाजिक प्रस्थिति
एक अध्ययन 293
– दिनेश मणि त्रिपाठी

37. कृष्णचंद्र भिक्खु के कथा-साहित्य में पारिवारिक-मूल्य 297
– डा. बिजेन्द्र कुमार

38. मन्दाकिनी घाटी में स्थित ग्राम चाका का जून 2013 की आपदा
के परिणामस्वरूप परिवर्तित भू-स्वरूप का अध्ययन 308
– डा. एल. डी. गार्ग्य

39. नाट्य के आद्य प्रवर्त्तक नटराज 315
– डा. राकेश कुमार मिश्र

40. बिहार की संगीत परम्परा का संक्षिप्त अवलोकन 320
– दिवाकर नारायण पाठक

41. भारत में वैश्वीकरण की चुनौतियाँ, समस्याएँ एवं समाधान में
सांगीतिक कार्यक्रम का महत्त्व 323
– डा. राजन कुमार

42. उत्तराखण्ड की प्राकृतिक व सांस्कृतिक वैभवता 328
– डा. नीलम ध्यानी

43. वैदिक वाङ्मय में प्राकृतिक चिकित्सा 332
– डा. पूनम पाठक

ISSN 2250-0561

GLIMPSES

GLIMPSES

(A Peer-Reviewed Bi-Annual Refreed International Journal of Multi Disciplinary Research)

Abstracted & Indexed at- Ulrich, U.S.A.

Vol. 7 No. 1 December 2017 (Suppl.)

Website: ruminationssociety.com

IMPACT FACTOR : 5.05

Vol. 7 No. 1 December 2017 (Suppl.)

ICI WORLD JOURNALS

COSMOS IMPACT FACTOR

ISSN 2250-0561

Editor-in-Chief :
Dr. Ram Sharma

बिजेन्द्र कुमार

बिजेन्द्र कुमार

सामाजिक-आर्थिक प्रस्थिति एक दूसरे से अन्तर सम्बन्धित है। रिचर्ड (1969) का कथन है कि व्यवसाय वास्तव में सामाजिक प्रस्थिति को निर्धारण करने वाला उत्तम माध्यम है।

REFERENCES

Hoebel, E.A. 1966. Anthropology : Study of Man, Mc Graw Hill Book Company New York, P. 310.

Kapoor, P. 1972. Women in the Home, in Kamila Bhasin (ed.) Position of Women in India, Leslie, Sawheny Programme of Training for Democracy, Friendrich Naumann-Stiftung, Bombay P. 17.

Lenski Gerhard, E. 'Social Participation and Status Crystallisation', American Sociological Review, Vol. 21, No. 4, P. 405.

Linton, R. 1936. The Study of Man, New York PP. 113-116. See also, Hoebel, E.A. 1966. Anthropology: Study of Man, Mc Graw Hill Book Co. New York, P. 310-315.

Lipset, S.M. and Bendex Reinhard, 1952. Social Status and Social Structure, British Journal of Sociology, Vol. II, P. 6.

Ma Clell and D.C. 1961. The Achieving Society, D. Van Nostrand & Co., Prince ton, PP. 185.

Mukherjee, Ila. 1972. Social Status of North Indian Women A.D. 1526- A.D. 1707, Shiva Lal Agarwala & Co. Educational Publishers, Agra, P. 111.

Popanoe, D. 1977. Sociology, Prantice Hall Inc., Englewood Cliffs, P. 221.

♦♦♦♦

कृष्णचंद्र 'भिक्खु' के कथा-साहित्य में पारिवारिक-मूल्य

डॉ. बिजेन्द्र कुमार
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
राधा कृष्ण सनातन धर्म (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय, कैथल, हरियाणा, पिन-136027

भूमिका

भारतीय समाज में परिवार का महत्व प्राचीन काल से ही रहा है। जब मनुष्य सभ्यता का विकास हुआ, तभी से मनुष्य समूह में ही रहता आया है। इसलिए परिवार किसी भी समाज की धुरी होती है, क्योंकि मनुष्य का विकास परिवार में रहकर ही संभव होता है। परिवार में रहकर ही बच्चा अपने जीवन के लिए महत्वपूर्ण संसाधन अर्जित करता है। यहीं से शिक्षा, संस्कार अधिग्रहण कर एक सभ्य नागरिक बनता है, जो कि किसी भी समाज के विकास के लिए प्रथम आवश्यकता है। भारतीय संस्कृति में भी परिवार सबसे महत्वपूर्ण संस्था है। परिवार की दो महत्वपूर्ण धुरी हैं – पति और पत्नी तथा उनके बीच के संबंध। यही कारण है कि भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही नारी को श्रेष्ठ माना है। क्योंकि वह परिवार को चलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। वह बच्चे का पालन-पोषण कर उसे संस्कारित करती है। इन परिवारों के समूह को ही समाज कहा जाता है। जैसा कि हम सब जानते हैं कि प्रत्येक समाजके कुछ मूल्य होते हैं। यह मूल्य पहले किसी परिवार द्वारा स्थापित किए जाते हैं, जिससे वह परिवार नियमबद्ध होकर सर्वहिताय के भाव से कार्य कर सके। यह मूल्य ही परिवार को बाँधकर चलते हैं तथा एक दूसरे के अधिकार एवं कर्तव्य सुनिश्चित करते हैं। ताकि परिवार में सबका समान विकास हो सके। आधुनिक युग के श्रेष्ठ कथाकार कृष्णचंद्र 'भिक्खु' ने अपने कथा-साहित्य में परिवार के लिए आवश्यक सहयोग, कर्तव्यनिष्ठा, प्रेमभाव, त्याग, संबंधों का पालन, एक दूसरे का सम्मान जैसे श्रेष्ठ मूल्यों का बहुत ही सुंदर चित्रण किया है। इन्हीं पारिवारिक मूल्यों का अध्ययन प्रस्तुत शोध आलेख में किया जाएगा।